SAMPLE

Maha Vaastu

MindSutra Software Technologies
A-16, Ramdutt Enclave, Milap Nagar,
Uttam Nagar, New Delhi-110059

वास्तु देवता की स्तुति

ओम् वास्तोष्पते प्रतिजानीहि अस्मान्,
स्वावेशो अनमीवो भवा नः।
यत्वेमहे प्रतितन्नो जुषस्व,
शन्नो भव द्विपदे शं चतुष्पदे।।

ईशान कोण की स्तुति

ईशानं वृषभारूढं त्रिशूलं व्यालधारिणम्।
शरच्चन्द्रसमाकारं त्रिनेत्रं नील कण्ठकम्।।

पूर्व दिशा की स्तुति

एरावत गजारूढं स्वर्णवर्ण किरीटिनम्।
सहस्त्रनयनं शक्रं वज्रपाणिं विभावयेत्।।

आग्नेय कोण की स्तुति

सप्तार्चिषं च बिभ्राण – मक्षमाला कमण्डलुम्।
ज्वालामालाकुलं देवं शक्ति हस्त छगासनम्।।

दक्षिण दिशा की स्तुति

कृतान्त मषिसारूढं दण्डहस्तं भयानकम्।
कालपाश धरंकृष्णं ध्यायेत्दक्षिण दिक्पतिम्।।

नैऋत्य कोण की स्तुति

रक्तंनेत्र शवारूढं नीलोत्पलदल प्रभम्।
कृपाणपाणिमात्स्त्रौघं पिबन्तं राक्षसेश्वरम्।।

पश्चिम दिशा की स्तुति

नागपाशधरं हृष्टं रक्तौघ द्युति विग्रहम्।
शशांड़क घवलं ध्यायेत् वरूण मकरासनम्।।

वायव्य कोण की स्तुति

आपीपं हरि तच्छायं विलोलध्वजधारिणम्।
प्राणभूतं च भूतानां घृणिहस्तं समीरिणम्।।

उत्तर दिशा की स्तुति

कुबेरं मनुजासीनं सगर्वं गर्वविग्रहम्।
स्वर्णच्छायं गदाहस्तं उत्तराधिपतिं स्मेरत्।।

मकान सुख प्राप्ति के लिए भगवान विश्वकर्मा की उपासना

किसी भी व्यक्ति के लिए रोटी, कपड़ा एवं मकान की व्यवस्था करना सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है। इनमें मकान की आकांक्षा सबसे अधिक होती है और सभी इसके लिए अपने स्तर पर हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं। कुछ लोग इसे पाने में सफल रहते हैं तो कुछ को मकान की प्राप्ति अंत तक नहीं होती या बहुत बिलंब से होती है। कभी–कभी मकान बनते–बनते भी अधूरा रह जाता है। ऐसी प्रतिकूल परिस्थितियों में दैवी कृपा का सहारा बिगड़ते कार्यों को भी बना सकता है।

मकान निर्माण के लिए भगवान विश्वकर्मा की उपासना बहुत सहायक होती है। इनकी उपासना से आपकी आर्थिक, सामाजिक एवं प्रशासनिक बाधायें दूर होती हैं एवं आपका कार्य सुचारू रूप से होगा। माघ महीने की शुक्ला पंचमी (बसंत पंचमी), माघ शुक्ला त्रयोदशी (विश्वकर्मा जयंती), श्रावण शुक्ला पूर्णिमा एवं हर मास की अमावस्या के दिन विश्वकर्मा की पूजा करने से मकान सुख में बढ़ोतरी होती है।

मकान या भूमि की प्राप्ति के लिए किसी शुभ दिन से विश्वकर्मा की पूजा शुरू करें एवं कार्य पूर्ण होने तक मंत्र जाप करते रहें। सबसे पहले विश्वकर्मा की फोटो को चौकी पर आसन बिछाकर या अपने पूजा स्थल में रखें, फिर निम्न मंत्र से जाप करें –

चिंतये विश्वकर्माणं शिवं वटतरोरधः।
दिव्य सिंहासनासीनं मुनिवृंद निसेवितम्।।
उपास्यमान ममौःस्त्रयमानं महर्षिभिः।
पंचवक्त्रं दशभुज ब्रह्मचारी ब्रतेस्थितम्।।
कुदालं करणी वास्यमि यंत्रं कमण्डलु।
विभ्राणं दक्षिणोर्हस्ते स्वरोह कर्मात्प्रभु।।
मेरूटंकं स्वनं भूषा वह्नि च दृधतं करै।
अवरोह क्रमणैव वमै शुभ विलोचनं।।

इसके तदुपरांत धूप, दीप, अगरबत्ती जलायें एवं गंध, कुमकुम, वस्त्र, माला एवं प्रसाद चढ़ायें तथा विश्वकर्मा के पांचों पुत्रों मनु, मय, त्वष्टा, शिल्पी एवं दैवज्ञ को ध्यान कर प्रणाम करें तथा अपने मकान सुख की प्राप्ति के लिए निवेदन करें।

इसके बाद निम्न मंत्र की 3 या 5 माला का जाप लगातार 6 महीने तक करें –

ओम् ऐं ह्रीं क्लीं क्रों भगवते विश्वकर्मणे मम मनोवांछित भूमि, आवास सुखं दापय दापय स्वाहा।।

या

ओम् नमः भगवते विश्वकर्मणे।।

मंत्र का 80000 जाप कर यथाशक्ति हवनादि करें।

ऐसा करने से भगवान विश्वकर्मा के आशीर्वाद से भूमि एवं मकान सुख प्राप्त होगा एवं आपके मकान में वास्तु दोष भी कम होंगे।

मकान कुण्डली

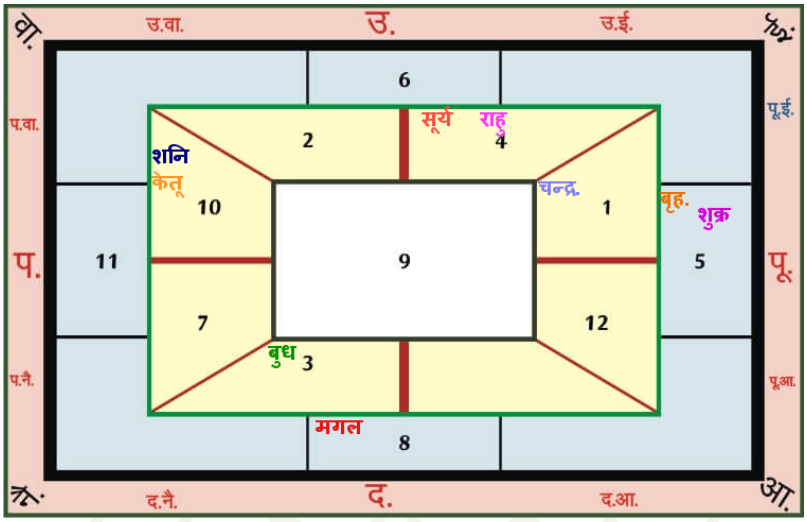

लग्न कुण्डली

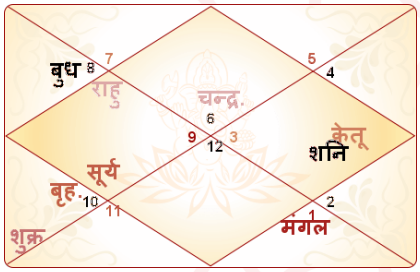

भाव चलित कुण्डली

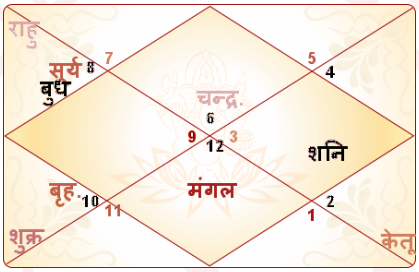

लाल किताब चन्द्र कुण्डली

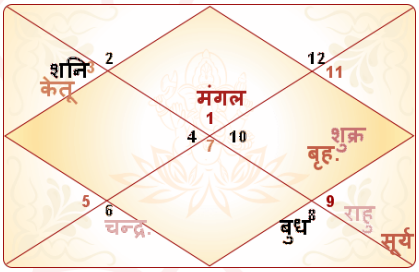

लाल किताब कुण्डली में ग्रहों की स्थिति

ग्रह	भाव	भावेश	प्रभाव	पक्का घर	भाग्यशाली	साथी ग्रह	कायम	धर्मी	सोया	विशेष
सूर्य	4	5	ग्रह			चन्द्रमा				शुभ भाव
चन्द्रमा	1	4	ग्रह			सूर्य	हाँ		हाँ	शुभ भाव
मंगल	8	1, 8	ग्रह	हाँ						अशुभ भाव
बुध	3	3, 6	ग्रह		हाँ				हाँ	अशुभ भाव
बृहस्पति	5	9, 12	ग्रह	हाँ						शुभ भाव
शुक्र	5	2, 7	राशि				हाँ		हाँ	...
शनि	10	10, 11	ग्रह	हाँ	हाँ					शुभ भाव
राहु	4		राशि					हाँ		शुभ भाव
केतु	10		राशि				हाँ		हाँ	शुभ भाव

ग्रहों की मकान कुण्डली में स्थिति के अनुसार मकान सुख

(लग्न कुण्डली पर आधारित)

लाल किताब के अनुसार, किसी भी कुण्डली में मकान से संबंधित कार्यों में शनि का बहुत बड़ा योगदान होता है। शनि की स्थिति से जातक के मकान के बारे में बहुत सारी जानकारियां प्राप्त होती हैं। मकान कब बनेगा एवं कैसा मकान शुभ फलदायक होगा, इसके लिए कुण्डली में शनि की स्थिति देखनी बहुत जरूरी हो जाती है। कुण्डली में उपस्थित शनि अपना शुभ–अशुभ प्रभाव मकान की नींव का प्रारंभ करने के 3 या 18 वर्ष बाद अवश्य देता है।

दसवें भाव (पश्चिमी वायव्य दिशा) में स्थित शनि का फल

सबसे पहले शनि के जो फल और उपाय दिए गये हैं उन्हे समझना है और करना है। अन्य ग्रहों के फल और उपाय पर शनि को वरीयता देना है।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। आप जब तक मकान का निर्माण नहीं करते या बना–बनाया मकान नहीं खरीदते, तब तक आपको बहुत धन लाभ होगा। लेकिन जैसे ही आप मकान बनवाते हैं या खरीदते हैं, आपकी आमदनी रूक सकती है। आपकी आमदनी का स्रोत बाधित हो सकता है। 3 वर्षों के बाद फिर आपकी स्थिति ठीक होने लगेगी।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। शुभ फलों में बढ़ोतरी एवं अशुभ फलों में कमी लाने के लिए तरस खाकर किसी की सहायता न करें। अपने मतलब के बगैर दूसरों की मदद करना आपके लिए नुकसानदायक हो सकता है।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। आपके लिए स्वास्तिक का निशान एवं 111 नंबर शुभ होंगे।

आपकी कुण्डली में शनि दसवें भाव में स्थित है। आपको अपने मकान निर्माण के लिए सरकारी विभागों से धन लाभ प्राप्त हो सकता है। आपको अपना मकान बनाने में आपके मित्रों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।

यदि आपके मकान का निर्माण बीच में ही रूक गया है, तो आपकी कुण्डली में शनि अशुभ स्थिति में है। आपको शनि का उपाय करना चाहिए।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– अपने मकान का निर्माण कार्य 39वें वर्ष से प्रारंभ करें।

2– मकान निर्माण के समय से ही शनि को अशुभता से बचाने के लिए मांस, अंडे एवं शराब का सेवन न करें।

3– मकान का निर्माण कार्य कभी भी अधूरा न छोड़ें।

4– अपने मकान में गणपति की स्थापना करें एवं नित्य पूजा करें।

5– अपने मकान के आस–पास पीपल का वृक्ष लगायें एवं उसकी सेवा करें। वृक्ष इस प्रकार लगायें कि उसकी छाया मकान पर न पड़े या कम से कम पड़े।

चौथे भाव (उत्तरी ईशान दिशा) में स्थित सूर्य का फल

सूर्य को लालकिताब और वैदिक ज्योतिष में पालक कहा गया है। इसी कारण सूर्य को भी भगवान विष्णु के बराबर मान–सम्मान दिया जाता है और केवल इन्ही दोनों को नारायण कहा जाता है।

आपकी कुण्डली में सूर्य चौथे भाव में स्थित है। आपको अपना मकान बनाने के लिए उत्तरमुखी या पूर्व–उत्तर के सामने का भूखंड लेना चाहिए। जैसा कि चौथा भाव माता से संबंधित है, आपको अपना मकान बनवाने से पहले मॉ का आर्शीवाद अवश्य लेना चाहिए तथा मकान की नींव अपनी मॉ, पत्नी यां अपनी कन्या संतान के साथ मिलकर रखें।

मकान का निर्माण कराते समय रसोई घर में भूलकर भी काले पत्थर का प्रयोग न करें। जहां तक सम्भव हो सके, सफेद पत्थर लगवायें, अन्यथा पाकशाला का संचालन करने वाली स्त्री खासकर माता एवं पत्नी का स्वास्थ्य आपके लिए चिंता का विषय हो सकता है।

आपकी कुण्डली में सूर्य चौथे भाव में स्थित है। यदि आप अपने पैतृक मकान में रहते हैं तो उस मकान का शुभ

फल प्राप्त करने के लिए तथा परिस्थितियों को अपने अनुकूल बनाने के लिए अपने मकान में यज्ञ जरूर करें एवं अपने पिता के नाम पर अंधों एवं भिखारियों के बीच निःशुल्क भोजन का वितरण करें।

अपने मकान में सूर्य से संबंधित वस्तुयें उत्तर दिशा में रखें। अपने भंडार गृह में रखे गेहूँ, गुड़ आदि को खराब न होने दें। उन्हें बचाने के लिए भूरी चीटियों को खिलायें।

आपको अपने मकान में दुकान बना कर लकड़ी या लोहे का कारोबार नहीं करना चाहिए और न ही किसी दूसरे को दुकान किराये पर देकर करवाना चाहिए।

यदि आप या आपकी पत्नी अपने मकान में दुकान बनाकर सोने, चांदी या कपड़े का व्यवसाय करते हैं तो आपको काफी शुभ फल प्राप्त होगा। कारोबार उन्नति करेगा एवं आपको काफी मात्रा में लाभ प्राप्त होगा।

आपको अपना मकान बनने के बाद अपनी माता को अपने पास रखना चाहिए एवं उनकी सेवा करनी चाहिए। इससे आपको अपनी बहन से संबंधित किसी भी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ेगा।

यदि आपके घर में पुत्र संतान जीवित नहीं बच रहा है तो अपने घर में आग की भट्टी स्थापित न करें। रात को सोते समय सफेद वस्तु, कपड़ा, दूध, शक्कर आदि सिरहाने रखकर सोयें और सुबह उसे दान कर दें। किसी धर्म स्थान के कुत्ते को रोटी दें।

आपकी कुण्डली में बुध अशुभ भाव में है। अपने मकान में पीतल के पुराने बर्तन कायम रखें, उन्हें नहीं बेचें।

आपकी कुण्डली में शनि, राहु या केतु की स्थिति या दृष्टि के कारण सूर्य अशुभ हो रहा है। अपने मकान का पूर्वी भाग खुला रखें, भाग्य आपका साथ देगा। घर में आटा पीसने की चक्की रखें, रोजगार में बरकत होगी।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– आपको अपने मकान के दक्षिणी भाग में लोहे के दरवाजे एवं खिड़कियाँ लगाने से बचाना चाहिए।
2– मकान की नींव में कभी भी सर्प स्थापित न करें।
3– आपको गृह प्रवेश के समय अपनी माता, पत्नी एवं कन्या संतानों को कपड़े एवं चांदी देना चाहिए।

पहले भाव (पूर्वी ईशान दिशा) में स्थित चन्द्रमा का फल

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पहले भाव में स्थित है। अपने मकान में रसोई घर पूर्वी भाग में बनवायें। यदि आप अपना रसोई घर दक्षिणी भाग में बनवाते हैं, तो आपकी माता एवं परिवार की अन्य स्त्रियों के लिए यह कष्टकारी हो सकता है।

चंद्रमा माता का प्रतिनिधित्व करता है, चंद्रमा का पहले भाव में होना स्पष्ट संकेत करता है कि, आपके घर पर माता का प्रभाव एवं वर्चस्व अधिक होगा। आपको कभी भी अपने परिवार की स्त्री या अन्य स्त्रियों का भी अपने मकान के अंदर या बाहर कहीं भी अपमान नहीं करना चाहिए। अपनी रसोई में कभी भी मांस, अंडा आदि नही बनवायें और नही बाहर से लाकर खायें। आपके लिए मकान में प्राकृतिक जल के स्रोत के लिए उत्तर का स्थान उपयुक्त एवं शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा पहले भाव में स्थित है। आपको अपनी 24 वर्ष की आयु से पहले मकान नहीं बनवाना चाहिए, अन्यथा आपको धन हानि हो सकती है। आपकी माता एवं संतान के स्वास्थ्य पर भी इसका अशुभ प्रभाव पड़ सकता है। अशुभ फलों में कमी करने के लिए जमीन में सौंफ दबायें।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– रसोई में चन्द्रमा स्थापित करने के लिए कम से कम 20 किलो चावल रसोई में या अपने भण्डार गृह में रखें।
2– चावल को कभी भी काली दाल के साथ मिलाकर नहीं रखना चाहिए।
3– रसोई मे चांदी के बर्तनों का प्रयोग करें एवं खाने में भी चांदी के बर्तनों का प्रयोग शुभ फलदायक होगा।
4– यदि मकान के निर्माण का कार्य प्रारंभ करते समय माता या पत्नी का स्वास्थ्य खराब होता है, तो भूमि में मंगल की वस्तुओं को दबायें।
5– आपको अपने मकान में वर्षा का जल एकत्र करने का समुचित प्रबंध अवश्य करना चाहिए।

आठवें भाव (दक्षिण दिशा) में स्थित मंगल का फल

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। आप मकान का निर्माण कार्य शुरू करने के बाद उसकी पूर्णता एवं मकान की लागत के बारे में नहीं सोचेंगे और हर हाल में अपना मकान बनायेंगे।

आपकी कुण्डली में दूसरा भाव खाली है या दूसरे भाव में चंद्रमा अथवा बृहस्पति स्थित है। आपके मकान के निर्माण में कभी कोई समस्या नहीं आएगी तथा मकान निर्माण से संबंधित आपका हर काम शुभ फलदायक होगा।

आपको अपने मकान की पूर्वी एवं दक्षिणी दीवार को काफी मजबूत एवं ऊँचा रखना चाहिए, इससे आपको शुभ फल प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में मंगल आठवें भाव में स्थित है। आपको अपने मकान की भूमि में भट्ठी का निर्माण नहीं कराना चाहिए, अन्यथा आप अपने लिए खुद समस्यायें पैदा कर सकते हैं। यदि मजबूरी वश ऐसा करना पड़े तो भट्टी से जली हुई मिट्टी निकालकर नदी में प्रवाहित करें और भट्टी में नई मिट्टी डालें।

अपने मकान के लिए भूखंड का चुनाव करते समय ध्यान रखें कि भूखंड दक्षिणमुखी न हो तथा इस पर बनने वाले मकान का मुख्य दरवाजा भी दक्षिणमुखी न हो।

मंगल के कुछ सामान्य उपाय –

रोज सफेद मंजन से दांत साफ करें। अपने मकान में दूध, शक्कर, चावल, शुद्ध चांदी स्थापित करें। जहां तक संभव हो सके, चांदी के बर्तनों का प्रयोग करें। बड़गद के पेड़ की जड़ में दूध में मीठा डालकर चढ़ायें और गीली मिट्टी का तिलक करें, इससे पेट की समस्याओं से मुक्ति मिलेगी। यदि आपके मकान में आग लगने की घटनायें अक्सर हो रही हैं तो मकान की छत पर चीनी की बोरियां रखें, घोड़े के मुंह में देशी खाण्ड दें। मिट्टी के बर्तन में शहद भरकर श्मशान में दबायें। मृगछाला एवं चांदी का चौकोर टुकड़ा अपने पास या घर में रखें। अपने मकान के दक्षिणी दरवाजे पर लोहे की कील ठोकें, काले घोड़े की नाल न ठोकें। काली वस्तुओं से परहेज करें। ढाक का वृक्ष न लगायें और न ही उसका प्रयोग करें। चिड़ियों के लिए मीठी चीजें डालें। हाथी दांत की वस्तुयें अपने पास या घर में रखें। तांबा, गुड़, गेहूं, घोड़ा, सोना, चांदी आदि का संग्रह करना शुभ फलदायक होगा।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– गले में चांदी धारण करें।

2– जिस दिन मकान का निर्माण प्रारंभ करें, उस दिन से 43 दिनों तक निरंतर कुत्तों को तंदूर में बनी मीठी रोटी दें।

3– अपने घर की स्त्रियों से कहें कि जब रोटी सेंकने वाला तवा गर्म हो जाए तो उस पर ठन्डे पानी की छींटें मारने के बाद रोटी सेंकना शुरू करें, इससे मंगल की अशुभता के कारण होने वाले रोगों से छुटकारा प्राप्त होगी।

तीसरे भाव (दक्षिणी नैऋत्य दिशा) में स्थित बुध का फल

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। आपको अपने मकान की नींव में फिटकरी का पिसा हुआ चूर्ण जितना अधिक हो सके डलवायें और रंग–रोगन में भी उसका प्रयोग करें, अति उत्तम फल प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में बुध तीसरे भाव में स्थित है। आपको अपने मकान का मुख्य दरवाजा दक्षिण दिशा में नहीं रखना चाहिए, अन्यथा आपकी पत्नी के सुख में बाधा उत्पन्न हो सकता है। आपके ससुराल वालों को भी कष्ट होगा, उन्हें कई समस्याओं का सामना करना पड़ेगा तथा आपका अपने ससुराल वालों के साथ संबंधों में खटास आ सकती है।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– आपको अपने मकान में केवल फिटकरी से ही दांत साफ करना चाहिए।
2– मकान में लगे पत्थर को दूध से प्रति दिन धोयें, यानि कि संकेत मात्र के लिए, मकान धोते समय पानी में थोड़ा सा दूध अवश्य डालें।
3– मकान की छत पर पक्षियों के लिए उपयुक्त स्थान बनाकर उनके दाना–पानी की व्यवस्था करें।
4– मकान के पूर्व दिशा में गणपति की मूर्ति लगायें।
5– जहां तक संभव हो सके, अपने मकान में मूंग आदि का सेवन न करें, अन्यथा रोगी होने की सम्भावना रहेगी।
6– ढाक के चौड़े पत्ते दूध में धोकर मकान से बाहर सुनसान स्थान पर दिन के समय एक गड्ढे में डाल कर उस पर एक पत्थर का टुकड़ा रख कर मिट्टी डाल दें। यह अवश्य ध्यान रखें कि जिस वस्तु या औजार से गड्ढा खोदा गया है उसे वापस लेकर नहीं आना है।
7– मकान निर्माण के दिन से लगातार 43 दिनों तक बिना नागा किये रात में मूंग को फिटकरी के नमकीन पानी मे भिगो कर प्रातः जानवरों को डालें, इससे आपके मकान में सुख–समृद्धि बनी रहेगी।

पांचवें भाव (पूर्व दिशा) में स्थित बृहस्पति का फल

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पांचवें भाव में स्थित है। आपको अपने पैतृक मकान या स्वनिर्मित मकान का सुख अवश्य प्राप्त होगा। कुछ संभावना है कि आपको सरकार के द्वारा निर्मित मकान का भी सुख प्राप्त हो सकता है।

आपको अपने मकान के लिए भूखंड लेते समय ध्यान देना चाहिए कि भूखंड में कोई वृक्ष न हो। वृक्ष को काटने से बचें, भले ही उसके लिए किसी भूखंड का त्याग ही करना पड़े। यदि भूखंड पर कोई पीपल या बरगद का पौधा है तो उसे निकलवा कर मंदिर में लगा दें एवं उसकी सेवा करें।

आप कुछ क्रोधी स्वभाव वाले हो सकते हैं। अपने मकान के निर्माण के समय अपने क्रोध पर नियंत्रण रखें एवं किसी को अपशब्द न कहें, अन्यथा मजदूरों की नाराजगी का असर आपके मकान पर दिख सकता है।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पांचवें भाव में स्थित है। आपको अपने मकान के बाहर पीपल का वृक्ष लगाना चाहिए एवं उसकी सेवा करनी चाहिए, काफी शुभ फल प्राप्त होगा। वृक्ष इस प्रकार लगायें कि मकान के वृक्ष का वेध न हो।

आपको अपने मकान के अंदर निश्चित रूप से गणपति की स्थापना करनी चाहिए तथा नित्य उनकी पूजा करनी चाहिए।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति पांचवें भाव में स्थित है। आप सेना में कोई वरिष्ठ अधिकारी हो सकते हैं, जिससे आपको सरकारी मकान का सुख प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में केतु अशुभ भाव में है। आपको अपने मकान में संतान की प्राप्ति नहीं हो सकती है। यदि आपकी कोई संतान बाहर पैदा होती है और फिर अपने मकान में आती है तो उसका स्वास्थ्य आपके लिए चिंता का विषय हो सकता है।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– धर्म के नाम पर धन लेकर उसका प्रयोग मकान के निर्माण में भूल कर भी न करें।

2– अपने मकान में गणपति की स्थापना करें और नित्य उनकी उपासना करें।

3– केतु को अशुभ न होने दें और उसके उपाय अपने मकान में करते रहें।

4– घर की वायु को अशुभ न होने दें। मांस, शराब एवं अंडे मकान में न बनायें और न ही सेवन करें।

पांचवें भाव (पूर्व दिशा) में स्थित शुक्र का फल

आपकी कुण्डली में शुक्र पांचवें भाव में स्थित है। आपका मकान आध्यात्म का केन्द्र होगा तथा आपके परिवार के लोग धर्म का अनुपालन करने वाले होंगे।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– आपको अपने मकान में अपनी माता एवं गऊ की सेवा करनी चाहिए।

2– अपने मन में अपने परिवार एवं मकान में रहने वाली किसी भी स्त्री के प्रति कोई अपवित्र विचार न रखें।

3– आपको अपने मकान के मुख्य द्वार को दूध–दही से धोना चाहिए, शुभ प्रभाव प्राप्त होंगे।

4– चंद्रमा की वस्तुओं और चांदी को हमेशा अपने मकान में स्थापित रखें, काफी शुभ फल प्राप्त होंगे।

चौथे भाव (उत्तरी ईशान दिशा) में स्थित राहु का फल

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में स्थित है। आपके मकान में कुछ–न–कुछ हट कर होगा, जिससे आपका मकान दूसरों के मकान से कुछ विचित्र प्रतीत होगा। आपको अपने पैतृक मकान का भी पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में स्थित है। आपको अपने द्वारा निर्मित मकान को अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए या अपने मकान के मरम्मत का कार्य अधूरा नहीं छोड़ना चाहिए, अन्यथा आपको धन हानि होगी एवं माता को भी कष्ट होगा।

आपकी कुण्डली में राहु चौथे भाव में स्थित है। अपने मकान में कोयले की बोरियों का अंबार न लगायें, अशुभ फल प्राप्त होगा। अपने मकान में चंद्रमा की वस्तुयें रखना शुभ फलदायक होगा।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– अपने मकान में चांदी की वस्तुओं का प्रयोग एवं उपयोग करें।
2– मकान निर्माण का कार्य पूरा करायें या मरम्मत भी करायें तो पूरा करायें, अधूरा न छोड़ें।

दसवें भाव (पश्चिमी वायव्य दिशा) में स्थित केतु का फल

आपकी कुण्डली में केतु दसवें भाव में स्थित है। आप काफी स्वाभिमानी होंगे एवं सहायता के लिए किसी के सामने न तो हाथ फैलायेंगे और न ही किसी के आगे झुकेंगे। अपना मकान निर्माण कराने से पहले या भूखंड लेने से पहले किसी को इसके बारे में बताने में आपको विश्वास नहीं होगा।

अपने मकान के निर्माण के समय से ही शनि को शुभ करने हेतु शनि के उपाय अवश्य करें, जिससे केतु का भी आपको शुभ प्रभाव प्राप्त हो।

मकान सुख के लिए निम्न उपाय/परहेज करें –

1– अपने मकान में चांदी के बर्तन में शहद भरकर रखें।
2– मकान की नींव में दूध एवं शहद अवश्य दबवायें।

3– 48 वर्ष की आयु होने पर अपने मकान में कुत्ता अवश्य पालें।

4– बृहस्पति और चन्द्रमा के उपाय मददगार साबित होंगे।

मकान में चित्र, खिलौने, रंग, प्रतीक और शुभ चिन्हो की स्थापना

(लग्न कुण्डली पर आधारित)

वास्तु के अनुसार यदि भवन में कोई वास्तुदोष हो तो उसे दूर करने का प्रयास करना चाहिए। इसके लिए शुभ चिन्हों, विभिन्न चित्रों, रंगो, खिलौनों व प्रतीकों आदि का प्रयोग भी किया जा सकता है। इन चिन्हों इत्यादि का प्रयोग घर में करने से अनेक प्रकार की बाधाएं दूर होती हैं एवं सुख–समृद्धि में वृद्धि होती है।

आपकी कुण्डली में सूर्य शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में उगते हुए सूर्य का चित्र एवं बंदर का खिलौना रखना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में राहु शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में हाथी के चित्र, मिट्टी का हाथी एवं हाथी दांत के खिलौने रखना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में केतु शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में पालतू कुत्तों के चित्र रखना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में चंद्रमा शुभ स्थिति में है। आपके लिए अपने मकान में दूध वाले वृक्षों के चित्र एवं खिलौने, जलाशय के चित्र रखना शुभ होगा।

मकान के मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्ह लगाना लाभदायक एवं उन्नतिकारक होता है। मकान के मुख्य द्वार पर स्वास्तिक, कलश, बेल–बूटें एवं हाथ का चिन्ह लगाना चाहिए। ध्यान रखें कि स्वास्तिक के चित्र में चार बिन्दु अवश्य हों, अन्यथा यह अधूरा माना जाता है। मछली का चित्र, दौड़ते हुए हिरण का चित्र, घुड़सवारी या हाथी पर सवारी का चित्र एवं कछुआ का चित्र शुभ रहता है।

मकान में दर्पण लगाने के लिए सबसे उपयुक्त दिशा उत्तर एवं पूर्व होता है। पश्चिम में दर्पण लगाने से सामान्य फल प्राप्त होता है। दक्षिण दिशा में दर्पण नहीं लगाना चाहिए। वॉश बेसिन के साथ भी दर्पण लगा सकते हैं। दर्पण को इस तरह रखें कि सूर्य की किरणें परावर्तित होकर आंखों पर न पड़े।

अपने मकान में घड़ी कभी भी ईशान, दक्षिण दिशा एवं अग्निकोण में नहीं लगायें, बाकी अन्य दिशायों में लगाना शुभ होता है। ध्यान रखें कि घड़ी कभी बंद न हो। यदि घड़ी खराब हो जाये, तो उसे तुरंत बनवायें या दूसरी घड़ी लगायें।

हल, घानी (कोल्हू) गाड़ी, अरहट (रेहट कुँयें से पानी निकालने का चरखा) काँटेवाले वृक्ष तथा पाँच प्रकार के उदुंबर (गूलर, बड़, पीपल, पलाश और कढंबर) और क्षीरतरु (जिस वृक्ष को काटने से दूध निकले), वीजोरा,

केला, अनार, नींबू , आक, इमली, बबूल, बेर व पीले फूल वाले तथा पक्षियों के घोंसले वाली लकड़ी घर बनाने के काम में नहीं लेनी चाहिए।

आपकी कुण्डली में बुध अशुभ भाव में है। आपके लिए अपने मकान में हरियाली के चित्र या बकरी के खिलौने रखना शुभ होगा।

आपकी कुण्डली में शनि एवं राहु शुभ भाव में है। अपने मकान में हाथी के चित्र एवं खिलौने रखना लाभदायक होगा।

आपकी कुण्डली में सूर्य एवं शनि, सूर्य एवं राहु, शनि एवं चंद्रमा, मंगल एवं राहु या शनि एवं मंगल एक साथ स्थित हैं। आपको अपने मकान में प्रवेश करने के समय पहली देहली के नीचे चांदी के पत्तर या नाग–नागिन दबाना चाहिए, इससे संतान को शुभ फल प्राप्त होगा।

आपकी कुण्डली में बृहस्पति एवं शुक्र एक साथ स्थित हैं। आपके लिए अपने मकान में रथ वाले चित्र, घोड़े का चित्र लगाना शुभ होगा।

ओम्

ओम् शब्द ब्रह्मा का प्रतीक माना जाता है। वेदों का शुभारम्भ भी इसी शब्द से हुआ है। इस शुभ चिन्ह् को हिन्दु धर्म में शक्ति का मूल स्रोत माना गया है। इसका प्रयोग भवनों में मंगल चिन्ह के रूप में किया जाता है। यही ब्रह्मा है। इस चिन्ह् के स्वरूप में कुछ परिवर्तन के साथ लगभग सभी धर्मों में अपनाया गया है। यह शब्द संपूर्ण ब्रह्मा, ब्रह्मांड, अपरिमित बल तथा प्रणव का प्रतीक होता है। इस शब्द को देखने व उच्चारण करने मात्र से ही मन की एकाग्रता हो जाती है तथा शांति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। इस चिन्ह् को घर में उचित स्थान पर स्थापित करना शुभ फलदायक होता है।

मंगल कलश

मंगल कलश वैदिककाल से ही जलपूरित एवं आम्रपत्र, पुष्प तथा नारियल से ढँका शुभ मंगल कलश शुभता, संपन्नता तथा समृद्धि का प्रतीक माना जाता रहा है, क्योंकि सृष्टि का उद्भव जल से हुआ है, इसीलिए ब्रह्मांड की उत्पत्ति का जल ही प्रतीक है। सभी धर्मशास्त्रों में जल से भरे हुए कुंभ को जीवन की पूर्णता का प्रतीक माना

गया है। इसको भवन में स्थापित करने से सदैव घर की सुख–शांति बनी रहती है एवं धन–संपदा में वृद्धि होती है। इसी लिए नए घर में प्रवेश करते समय सबसे पहले जल से भरे कुंभ को स्थापित किया जाता है।

स्वास्तिक

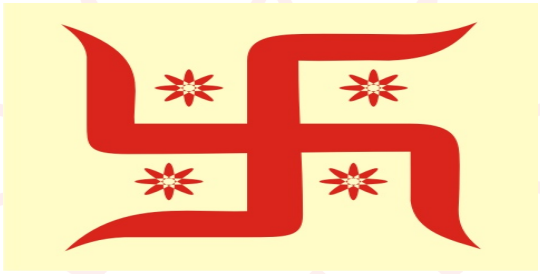

स्वास्तिक अति प्राचीन काल से ही स्वास्तिक को मांगलिक चिन्ह के रूप में प्रयोग किया जाता है। धार्मिक मतानुसार इस चिन्ह को जीत का प्रतीक माना जाता है। इस चिन्ह को शुभ माना जाता है और भवन के मुख्य द्वार के दोनों ओर बनाया जाता है; ताकि अनिष्टकारी दृष्टि से भवन की रक्षा होती रहे। घर में स्वास्तिक का चिन्ह स्थापित करने से पारिवारिक जनों को उनके कार्यों में सफलता प्राप्त होती है।

पंचागुलक हाथ

पंचागुलक हाथ मांगलिक चिन्ह पंचागुलक हाथ गृह प्रवेश पुत्रजन्म तथा विवाह के शुभ अवसर पर हल्दी व चावल की पीठी से पींठ पर लगाने की काफी पुरानी परम्परा चली आ रही है। पाँच की संख्या पाँच तत्त्वों की निरंतरता, अनश्वरता का प्रतीक है। हाथ को कर्म का प्रतीक माना गया है, यह देवताओं की अभय मुद्रा व आशीष मुद्रा का प्रतीक है। भवन में हाथ को मांगलिक चिन्ह के रूप में स्थापित करके, समृद्धि पंच महाभूतों एवं कर्म की महत्ता को प्रकट किया जाता है। बौद्ध धर्म में तो हाथ की मुद्राओं द्वारा ही विभिन्न मनोदिशाओं को संकेत रूप में बताया गया है।

मीन (मछली)

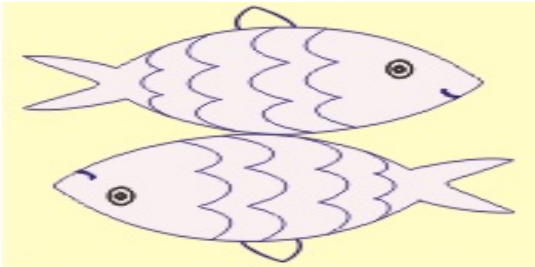

मीन (मछली) को सच्चे प्रेम की प्रतीक माना गया है। यात्रा शुरू करने से पहले मत्स्य दर्शन कार्य सफलता का सूचक व शुभ माना जाता है। दशहरा पर्व पर मत्स्य दर्शन की प्राचीन परम्परा हैं भवन के मुख्य द्वार पर जुड़वाँ मछलियों के चित्र को बनाने की परम्परा है। इसके पीछे यही भावना जुड़ी है कि यदि मत्स्य के साक्षात् दर्शन नहीं होते, तो उसके चित्र में ही दर्शन हो जायें। इसे मुख्य द्वार पर मांगलिक चिन्ह के रूप में अंकित करने का प्रचलन शुभता का द्योतक है।

धार्मिक शुभ प्रतीक

ईसाइयों का शुभ प्रतीक चिन्ह क्रॉस तथा मुस्लिमों का शुभ प्रतीक अंक 786 तथा अर्द्धचन्द्र व सिक्खों का एक ओंकार है। इन मांगलिक चिन्हों को भवनों के बाहर द्वार पर लगाना चाहिए। ये शुभ तथा समृद्धि के सूचक हैं।

त्रिशूल

भगवान शंकर के प्रतीक त्रिशूल का चिन्ह् सभी प्रकार की कठिनाईयों को दूर करता है एवं सभी प्रकार की सुख–समृद्धि, धन व यश में वृद्धि करता है।

लाल रंग

लाल रंग को मंगल का कारक माना जाता है। इस शुभ चिन्ह को लकड़ी के एक चौकोर टुकड़े को लाल रंग से रंगकर अथवा उसके उपर लाल रंग का कपड़ा चढ़ाकर बनाया जाता है। इस चिन्ह् को घर में रखने से किसी

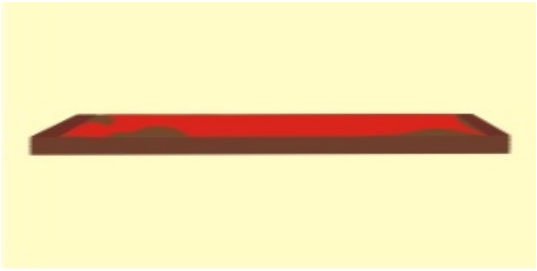

प्रकार बाहरी बाधा, बाहरी बीमारी, जादू, टोना आदि का प्रभाव घर के सदस्यों पर नहीं पड़ता है।